

2101000105020331
EXAMINATION FEBRUARY-MARCH 2024
BACHELOR OF ARTS (FIFTH SEMESTER)
HINDI - XI - MADHYAYUGIN KAVITA (SURDAS -
BHRAMARGEET SAAR) - LEVEL 2

[Time: As Per Schedule]

[Max. Marks: 50]

Instructions:

1. Fill up strictly the following details on your answer book

a. Name of the Examination: **BACHELOR OF ARTS (FIFTH SEMESTER)**

b. Name of the Subject: **HINDI - XI - MADHYAYUGIN KAVITA (SURDAS - BHRAMARGEET SAAR) - LEVEL 2**

c. Subject Code No: **2101000105020331**

2. Sketch neat and labelled diagram wherever necessary.

3. Figures to the right indicate full marks of the question.

4. All questions are compulsory.

Seat No:

--	--	--	--	--	--

Student's Signature

Q.1 बहु विकल्पी प्रश्नो के उत्तर दीजिए ।

10

(१) सूरदास का जन्म कहाँ हुआ था ?

(अ) वृन्दावन में

(ब) काशी में

(क) ब्रज में

(ड) रूकता या सीही में

(२) सूरदास के गुरु का नाम क्या था?

(अ) रामानन्द

(ब) रामानुजाचार्य

(क) वल्लभाचार्य

(ड) नरहरिदास

(३) 'भ्रमरगीत' में कौन-सा रस प्रमुख है?

(अ) वियोग शृंगार

(ब) शांतरस

(क) संयोग शृंगार

(ड) वात्सल्य

(४) उध्व किसका भक्त बन जाता है?

(अ) राधाका

(ब) कृष्ण का

(क) गोपियों का

(ड) सूरदास का

(५) इन में से किस कवि की गोपिया सर्वाधिक भावुक हैं?

- (अ) सूरदास (ब) नन्ददास
(क) रत्नाकर (ड) कुंभनदास

Q.2 'भ्रमरगीत में सूरदास ने गोपियों के विरह का बड़ा उत्कृष्ट और विस्तृत वर्णन किया है।", इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए। **13**

अथवा

'भ्रमरगीत निर्गुण पर सगुण की विजय का काव्य है।" सिद्ध कीजिए।

Q.3 कुब्जा का चरित्र चित्रण कीजिए। **13**

अथवा

'भ्रमरगीत के आधार पर उधदव का चरित्रांकन कीजिए।

Q.4 (अ) टिप्पणी लिखिए। **14**

सूरदास का साहित्यिक परिचय

अथवा

'भ्रमरगीत के संवाद |

(ब) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

काहे को गोपीनाथ कहावत?

जो पै मधुकर कहत हमारे गोकुल काहें न आवत?
सपने की पहिचानि जानि के हमहिं कलेक लगावत ।
जो पे स्याम कूबरी रीझे सो किन नाम धरावत?
ज्यों गजराज काज के औसर और दसन दिखावत ।
कहन सुनन को हम हैं ऊध्यो सूर अनत बिरमावत ॥

अथवा

कोऊ आवत है तन श्याम |
वैसेइ पट, वैसिय रथ बैठनि, वैसिय है उर दाम ॥
जैसी हुति उठि तैसिय दौरी छांडि सकल ग्रहकाम |
रोम पुलक, गदगद भई तिहि छन सोचि अंग अभिराम ॥
इतनी कहत आय गए ऊधो, रही टगी तिहि ठाम ।
सूरदास प्रभु यां क्यों आवें बँधे कुब्जा रस श्याम ॥
